

फूले कथा फुलवाड़ी (७)

तेरी रूप माधुरी मन मोहे जग मंगल साईं सुखकारी
रोम रोम नैन बनि जोहे रसिक जननि उर उज्यारी॥

महा सौभाग्य शाली है मैया सुखदेवी जूं तेरी
लड़ाती लाढ़ जो निश दिन सदां रस प्रेम उरझेरी
फली फूली तपस्या है सुक्रत जी बेली जो बोई
वेदो की सारु जो सम्पति मैया ने गोद में गोई

क्या अदभुत शोभा बांकी है यह प्यारी अनोखी झांकी है
लखि लालन के मुख पकंज को होते है सुखी सब नर
नारी॥

सुनि सुनि तोतिरे बैन बचे के मन मुग्ध होता है माता का
पुनि पुनि अंचल छोर लिए धन्य वाद मनाती है धाता का
प्रभू तेरी अहेतुकी कृपा से मेरी गोद में ऐसा लाल मिला
मानो मान सरोवर में सौरभ पूर्ण कमल खिला
मृदु मुस्कनि लाल की मोहती है बिन पलकनि

यह छवि जोहिती है

महा मोद में मेरा मन मगन हुआ सुनि श्रवण
सुखद किलकारी॥

पूर्ण मासी में यह पूरणु है चंद्र मेरा अब उदय भया
जांके स्व प्रकाश से जग का अविद्या तिमिर नशाय गया
घर घर हर्ष हुलास की सरिता मधुर वेग से बहती है

सफल मनोरथ भए सवन के आनंद बेल उलहते है
गुर कृपा जीवन मूड़ी है सुख आनन्द से भर पूरी है
चिरु चिरु जीवे यह लाल मेरा जब लग गंग यमुन बारी॥

सुर नर नारी मिल मिलके वाधाई देने आवत हैं
कुंवर की बाल लीला को गगन में देव गावत हैं
मधुर भगती का सब जग में पूर्ण प्रचार अब होगा
मिटेगा कलि कलुश जन का बनेगा हरि मिलन योगा
यह मैगसि जन्म वाधाई है सुनि प्रसन्न रघुराई है
वेग बढ़े यह बालक प्यारा जो फूले कथा की फुलवाड़ी॥